मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 3

MHD–19

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम. ए. हिन्दी)

(एम.एच.डी.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2024

एम.एच.डी.–19 : हिन्दी दलित साहित्य का विकास

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : *कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **प्रथम** प्रश्न अनिवार्य है। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किसी **एक** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10

(क) बन्द किले से बाहर
झाँककर तो देखो
बरफ पिघल रही है।
बछ्ड़े मार रहे हैं फुर्री
बैल धूप चबा रहे हैं

और एकलव्य
पुराने जंग लगे तीरों को
आग में तपा रहा है।

(ख) प्रचलित परिपाटी से हटकर
मैं भागती हूँ–सब ओर एक साथ
विद्रोहिणी बन चीखती हूँ
गूँजती है आवाज सब दिशाओं में
मुझे अनन्त असीम दिगन्त चाहिए
छत का खुला आसमान नहीं
आसमान की खुली छत चाहिए!
मुझे अनन्त आसमान चाहिए!!

2. 'द्रोणाचार्य सुनें : उनकी परंपराएँ सुनें' कविता का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। 10

3. दलित लोककथा और दलित कहानी के अंत:सम्बन्धों पर प्रकाश डालिए। 10

4. दलित अस्मिता के संदर्भ में 'परिवर्तन की बात' कहानी का मूल्यांकन कीजिए। 10

5. 'अंगारा' कहानी की मूल-संवेदना को स्पष्ट कीजिए। 10

6. ‘सुमंगली’ कहानी में अभिव्यक्त दलित स्त्री शोषण की त्रासदी पर प्रकाश डालिए। 10

7. दलित आत्मकथनों की प्रमुख विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए। 10

8. ‘जूठन’ की कथावस्तु का विवेचन कीजिए। 10

× × × × × × ×